जान राल्स 1921-2002

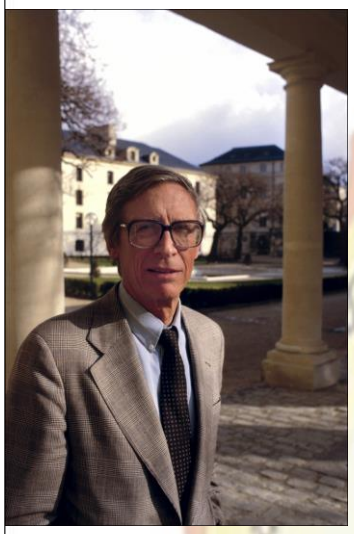

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय।

दुर्ग , छत्तीसगढ़।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

प्रमुख कार्य

1- थियरी आफ जस्टिस 1971

2- जस्टिस एज फेयरनेस 2001

न्याय सिद्धान्त

जॉन रॉल्स अपने न्याय सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध है। बीसवीं शताब्दी में उन्होंने एक नया न्याय सिद्धान्त दिया जो अपनी पुरानी व्याख्याओं से कई अर्थों में भिंन्न थी।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

उद्देश्य-

उन्होंने तत्कालीन अमेरिका में पूंजीवादी आय और साधनों के असमान वितरण को न्याय पूर्ण सिद्ध करने के लिए उस असमानता को एक दार्शनिक आयाम देने का प्रयत्न किया । जो उनके न्याय सिद्धांत की मूल विशेषता है और मूल उद्देश्य भी है ।

व्याख्या

राल्स न्याय की एक उदारवादी समतावादी संकल्पना प्रस्तुत करते हैं । उन्होंने उदारवाद में समानता और नैतिकता के आयाम जोड़ कर उसे और समृद्धि बनाया । अपने न्याय सिद्धान्त की व्याख्या के लिए समझौतावाद को पुनर्स्थापित किया तथा वैसे ही काल्पनिक स्थिति की कल्पना की । इसे वह मूल स्थिति कहते हैं ।

मूल स्थिति

रॉल्स के अनुसार न्याय का प्रश्न ही तब पैदा होता है जब स्थितियां अन्याय पूर्ण हो । लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता से अधिक अर्जित की गई वस्तुओं संपत्ति आय, शक्ति , साधन स्वतंत्रता, सत्ता में भागीदारी आदि के लिए चिंतित रहते हैं इनके प्रति अन्याय पूर्ण स्थितियों से बचने के लिए ही न्याय की शरण में जाते हैं ।

लेकिन प्रश्न है कि यह न्याय कैसे स्थापित होगा ?

राल्स के अनुसार **यदि लोगों को यह विश्वास हो जाए कि विरोध और संघर्ष की स्थिति तथा साधन और पूंजी का असमान संकेंद्रण या वितरण अन्याय पूर्ण नहीं है तो** लोगों में समझौता हो सकता है । यलेकिन अधिकांश लोग एक **अज्ञानता के नकाब** के पीछे रहते हैं । जिससे यह मुश्किल हो जाता है ले। किन उसके बाद भी कुछ लोगों में कुछ विवेकशीलता बची रहती है , जिससे लोग यह जान जाते हैं कि पूंजी आय और संसाधनों का अन्याय पूर्ण वितरण भी नया पूर्ण हो सकता है, यदि उस से अधिकांश लोगों को लाभ हो ।

अन्याय पूर्ण वितरण न्याय पूर्ण दो कारणों से हो सकता है ।

1- **सार्वभौमिक स्वतंत्रता का विकास**

रोल्स के अनुसार सबको समान प्रकार की समानता प्राप्त होनी चाहिए । अर्थात सबको अवसर की समानता होनी चाहिए । अवसर की स्वतंत्रता से कार्य करने की स्वतंत्रता अपने आप प्राप्त हो जाती है ।

2- भेद मूलक सिद्धांत

राल्स के अनुसार स्वतंत्रता और अवसर की समानता से सामाजिक आर्थिक विषमताएं पैदा होगी । इसलिए आवश्यक हो जाता है कि

A- सामाजिक विषमताएं इस प्रकार से व्यवस्थित की जाए कि इससे न्यूनतम स्थिति वाले व्यक्ति को भी अधिकतम लाभ हो ।

B- सामाजिक आर्थिक विषमताएं अवसर की समानता के साथ आवश्यक रूप से जुड़ी हो तभी यह न्यायपूर्ण हो सकती हैं ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

राल्स उपरोक्त सिद्धांतों को वरीयता क्रम में रखते हैं सिद्धांत एक को दो पर और सिद्धांतों दो के बी को ए पर वरीयता दी जाएगी ।

मूल्यांकन

राल्स के अनुसार एक स्वतंत्र खुले और प्रतियोगी समाज में सामाजिक आर्थिक विषमता है स्वभाविक है । लेकिन यदि इनसे समाज की बहुसंख्यक संख्या को लाभ हो तो यह स्थिति न्याय पूर्ण ही होगी । इसप्रकार राल्स ने समझौतावाद उपयोगितावाद और वितरणित्मक न्याय की अवधारणा को मिलाकर न्याय की एक नवीन अवधारणा प्रस्तुत की जो स्वतंत्रता प्रतियोगी समाज की विषमताओं और अन्याय पूर्ण स्थितियों को न्याय पूर्ण सिद्ध करने का प्रयास करती है ।

गृह कार्य

1- जान राल्स के न्याय सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए ।

2- राल्स के अनुसार असमतामूलक समाज किस प्रकार नायायपूर्ण हो सकता है ।

3- राल्स के अनुसार अज्ञानता का नकाब क्या है ?

संदर्भ

आन लाइन रिसोर्स

https://ethicsunwrapped.utexas.edu/glossary/veil-of-ignorance

https://1000wordphilosophy-com.cdn.ampproject.org/v/s/1000wordphilosophy.com/

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE